150 वीं जयंती
★ डॉ. हरी सिंह गौर ★

ये हैं बुन्देलखण्ड

भाग- एक

संपादक
लक्ष्मी पाण्डेय

परामर्श
सुरेश आचार्य

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा सम्पादक/सम्पादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN 978-93-89341-77-5

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 900 रुपये

आवरण

असरार अहमद, सागर

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

अनुक्रम

5	*डॉ. सुरेश आचार्य*	यह गौर बब्बा के प्रति श्रद्धांजलि है...
11	*लक्ष्मी पाण्डेय*	सम्पादकीय

'अ' : सागर-दमोह

27	*डॉ. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव*	सागर के संस्थापक : गोविन्द बल्लाल पन्त एवं विसाजी गोविन्द चान्दोरकर
31	*प्रो. विवेकदत्त झा*	सागर जिले का साँस्कृतिक इतिहास
44	*डॉ. प्रदीप शुक्ल*	सागर क्षेत्र के शैलचित्र
57	*प्रो. पुरुषोत्तम सोनी*	सागर नगर की भू-आकृतियाँ
65	*मणीकान्त चौबे 'बेलिहाज'*	सागर में हिन्दू आस्था के प्रतीक : प्राचीन मन्दिर
77	*डॉ. श्याम मनोहर पचौरी*	देवरी तहसील के प्रमुख धार्मिक तथा पर्यटन स्थल
81	*डॉ. श्याम मनोहर पचौरी*	बण्डा तथा रहली के प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थल
95	*डॉ. नागेश दुबे*	सागर के अतीत की पहचान : गढ़पहरा
101	*डॉ. नागेश दुबे*	साँस्कृतिक धरातल पर एरण
108	*डॉ. पंकज तिवारी*	एक सपना जो साकार हुआ
117	*कपिल बैसाखिया*	सागर शहर में इन्द्रधनुषी आभामंडल निर्मित करतीं संस्थाएँ
129	*निशा जैन*	बीना : एक समृद्ध नगर
145	*डॉ. किरण जैन*	सागर जिला और उद्योग-धन्धे
148	*लक्ष्मी पाण्डेय*	*शास्त्रीय नृत्य के गुरु : पंडित प्रेमनारायण गुरु*
151	*नरेन्द्र दुबे*	इतिहास के पन्नों में दमोह जिला
161	*डॉ. रमेश चन्द्र खरे*	दमोह जिले के साहित्यकार
168	*डॉ. नाथूराम राठौर*	दमोह जिला : पत्रकारिता के पृष्ठ
172	*ओजेन्द्र तिवारी*	दमोह शहर के प्रमुख मन्दिर
178	*डॉ. संजय बाबू सोनी*	दमोह जिले के प्राचीन वास्तुशिल्प में मठ

सागर के अतीत की पहचान : गढ़पहरा

डॉ. नागेश दुबे

बुन्देलखण्ड में ऐतिहासिक दुर्गों और सामरिक महत्व के मध्यकालीन गढ़ काफी संख्या में हैं, जो ऊँची पहाड़ियों पर बनाए जाते थे। इन्हें 'गिरि दुर्ग' कहा गया है। इन किलों के अन्दर सुरक्षित राजप्रासादों तथा धार्मिक स्मारकों को निर्मित किया जाता था। ये किले इतिहास की प्रसिद्ध घटनाओं के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। इतिहास की अनगिनत घटनाओं, युद्ध और सन्धियों के ये अनवरत काल तक केन्द्र बने रहे। इन किलों की प्राचीरों में बुन्देलखण्ड की अनगिनत शौर्य गाथाएँ, बलिदान और वीरता की कहानियाँ समाहित हैं। सागर क्षेत्र में गढ़पहरा, धमौनी, जैसीनगर, खुरई, एरण, खिमलासा, रहली, सानोधा, राहतगढ़, नरयावली, सागर आदि स्थानों में निर्मित मध्यकालीन प्राचीन गढ़ों का बुन्देलखण्ड के परवर्ती इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान है।

किलों के निर्माण की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। सिन्धु सभ्यता से प्रारम्भ होकर 19वीं शताब्दी ईसवी तक विभिन्न प्रकार के किलों के निर्माण की परम्परा देखने को मिली है। प्राचीन विचारकों कौटिल्य, मनु, कामन्दक आदि ने विभिन्न प्रकार के किलों का विवरण अपने ग्रन्थों में दिया है। प्राचीन कालीन शासकों द्वारा निर्मित किलों की परम्परा का पालन मध्यकालीन मुस्लिम, मराठा, गौड़ तथा दांगी शासकों ने भी किया। किलों के महत्व को स्वीकार करते हुए इन शासकों ने अनेक किलों का निर्माण करवाया। यही कारण है कि मध्यप्रदेश के मध्य में स्थित सागर जिले में 32 किलों के अवशेष हैं। गढ़पहरा का महत्व सागर क्षेत्र के इतिहास की दृष्टि से बहुत ही विशिष्ट है।

ऐतिहासिक स्थान गढ़पहरा सागर नगर से लगभग 10 कि.मी. उत्तर दिशा में झाँसी जाने वाली सड़क की दायीं ओर की पहाड़ी पर स्थित है।[1] गढ़पहरा अपने किले के खण्डहरों व प्राचीन बस्ती के खण्डहरों, मोतीताल के अलावा प्राचीन हनुमान मन्दिर तथा अनगढ़देवी मन्दिर के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। गढ़पहरा को प्राचीन सागर भी स्वीकार किया गया है।[2]